सीखने की राह खोलें...

बढ़ें, चलें...

हिंदी

9

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, केरल

2022

भूमिका

कोविड-19 महामारी के कारण स्कूलों के बंद होने से बच्चे असमान रूप से प्रभावित हुए क्योंकि महामारी के दौरान सभी बच्चों के पास सीखने के लिए ज़रूरी अवसर, साधन या पहुँच नहीं थी। शुरुआती चुनौतियों के बाद नवीनतम तकनीकियों का सहारा लेकर शिक्षा ज़ारी रखने का प्रयास शिक्षा विभाग की ओर से हुआ था। महामारी के दौरान ऑनलाइन शिक्षा पर अत्यधिक निर्भर होने में हम विवश भी थे। इसी वजह से छात्रों की शिक्षा में अस्थाई तौर पर व्यवधान उत्पन्न हुआ था। यह छात्रों की अधिगम उपलब्धियों में अंतराल उत्पन्न होने का कारण बन गया है।

हम निश्चित रूप से यह मानते आ रहे हैं कि शिक्षकों और छात्रों के बीच आमने-सामने की बातचीत के साथ-साथ कक्षा-कक्ष के भीतर और बाहर छात्रों के बीच आपस में स्वस्थ चर्चा अच्छी पढ़ाई का अभिन्न हिस्सा है। शिक्षण प्रक्रिया में ऑनलाइन शिक्षा मदद तो कर सकती है लेकिन कक्षाई प्रक्रियाओं की जगह नहीं ले सकती। सामाजिक और भावनात्मक पढ़ाई, जैसे- संवेदना, आदर, सहयोग और बातचीत, विवेचनात्मक और रचनात्मक सोच, बहुमुखी दृष्टिकोण आदि आमने-सामने की असली कक्षाई प्रक्रियाओं से ही संभव हैं। मात्रेतर भाषा हिंदी की शिक्षण-अधिगम प्रक्रियाओं में भी यह शत-प्रतिशत सही है। इस प्रकार की कक्षाई प्रक्रियाओं से वंचित रहने से बच्चों की भाषाई दक्षताओं एवं उसके प्रयोगों में अंतराल नज़र आ रहा है। विशेषकर बातचीत, डायरी लेखन, कविताओं का आशय लेखन, पत्र तैयार करना, लेख तैयार करना आदि में यह अंतराल अधिक मात्रा में मौजूद है। सीखने के इस अंतराल की भरपाई समय की माँग है।

ऐसे में अपने छात्रों को सामाजिक, भावनात्मक समर्थन प्रदान करने और भाषाई दक्षताओं में पीछे छूट जाने की जोखिम झेल रहे छात्रों को विशेष सहायता उपलब्ध कराने जैसी जवाबी कार्रवाई का पहल शिक्षा विभाग ले रहा है। कोविड महामारी से उत्पन्न सीखने के अंतराल से छात्रों को उबारने में, भाषाई दक्षताओं में हुए व्यवधान की भरपाई करने में शिक्षकों की भी अहम भूमिका है।

भरपाई की इस सामग्री में कक्षाई प्रक्रियाओं के कुछ नमूने मात्र हैं। उम्मीद है, अपनी कक्षा की माँग के अनुसार विविधतापूर्ण सामग्रियाँ शिक्षक स्वयं तैयार करेंगे और अधिगम उपलब्धियों की प्राप्ति में व्यवधान महसूस करनेवाले छात्रों की ज़रूरतों की पूर्ति करने में जागरूक रहेंगे। आशा है, यह सामग्री इस प्रक्रिया में शिक्षकों की मददगार रहेगी।

निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं
प्रशिक्षण परिषद्, केरल

पक्षी और दीमक

अधिगम उपलब्धि : कहानी पढ़कर पटकथा का दृश्य तैयार करता है।

पक्षी और दीमक कहानी का संक्षिप्त रूप वाचन के लिए दें। (चार्ट / श्यामपट / पी.पी.टी.)

> नौजवान पक्षी गाड़ीवाले के प्रलोभन में फँस जाता है। वह दो दीमकें खरीदने के लिए अपना एक पंख गाड़ीवाले को देता है। पिता पक्षी कहता है कि दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं है। लेकिन नौजवान पक्षी अस्वीकार करता है। वह निरंतर दीमकों के बदले पंख देता रहता है। अंत में उड़ने की उसकी क्षमता नष्ट होती है। अब वह गाड़ीवाले से अपने पंख वापस लेना चाहता है। इसके लिए वह दीमकें इकट्ठा करता है। वह गाड़ीवाले की प्रतीक्षा में बैठता है। एक दिन गाड़ीवाला आता है। पर गाड़ीवाला पक्षी को पंख वापस नहीं देता है। अपने पंख वापस न मिलने से पक्षी दुखी हो जाता है। अंत में नौजवान पक्षी को एक काली बिल्ली खा जाती है।

छात्रों को पढ़ने का निर्देश दें।

चर्चा चलाएँ, छात्रों को प्रत्येक प्रश्न पर स्वतंत्र प्रतिक्रिया करने का अवसर दें।

- इस कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?
- यहाँ नौजवान पक्षी को दो दीमकें कैसे मिलती हैं?
- निरंतर पंख देने का परिणाम क्या होता है?
- नौजवान पक्षी क्यों दुखी और निराश हो गया?
- नौजवान पक्षी काली बिल्ली का शिकार बन जाता है। क्यों?

कहानी का संक्षिप्त रूप आपने देखा।

अब बताएँ कि इस कहानी के मुख्य प्रसंग कौन-कौन-से हैं?

निम्नांकित प्रसंगों को कहानी के अनुसार क्रम से लिखने का अवसर दें।

- गाड़ीवाले को पंख देकर नौजवान पक्षी का दीमक खरीदना।
- पिता के उपदेशों को अस्वीकार करना।
- नौजवान पक्षी को अपने मुँह में दबाकर काली बिल्ली का चला जाना।
- दीमकें इकट्ठा करके गाड़ीवाले की प्रतीक्षा में नौजवान पक्षी का बैठना।

चुनिंदे छात्रों से प्रस्तुतीकरण कराएँ।
परिमार्जन का अवसर दें।

अध्यापिका एक प्रसंग लें और चर्चा चलाएँ।

गाड़ीवाले को पंख देकर नौजवान पक्षी का दीमक खरीदना।

वाचन कराएँ।

यह वर्कशीट दें।

सही उत्तर पर '✓' चिह्न लगाएँ।

❖ यह घटना कब हुई होगी?

सबेरे ☐

रात को ☐

❖ कौन गाड़ीवाले की आवाज़ सुनकर नीचे उतरा?

गाड़ीवाले की आवाज़ सुनकर पिता पक्षी नीचे उतरा। ☐

गाड़ीवाले की आवाज़ सुनकर नौजवान पक्षी नीचे उतरा। ☐

❖ प्रस्तुत प्रसंग के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?

नौजवान पक्षी और गाड़ीवाला ☐

मित्र पक्षी और पिता पक्षी ☐

❖ गाड़ीवाला चिल्लाकर क्या कहता था?

दो दीमकें दो और एक पंख लो ☐

एक पंख दो और दो दीमकें लो ☐

- अगला प्रसंग देखें।

पिता के उपदेशों को अस्वीकार करना।

सही उत्तर पर '✓' चिह्न लगाएँ।

- पिता ने नौजवान पक्षी को क्या उपदेश दिया?

बेटे, दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार है। ☐

बेटे, दीमकें हमारा स्वाभाविक आहार नहीं है। ☐

- इस प्रसंग के पात्र कौन-कौन हैं?

गाड़ीवाला और पिता पक्षी। ☐

पिता पक्षी और नौजवान पक्षी। ☐

- यहाँ किस समय की सूचना दी है?

दोपहर की ☐

रात की ☐

- यहाँ की घटना कहाँ हुई है?

आसमान में ☐

ज़मीन पर ☐

चर्चा चलाएँ :

दोनों प्रसंगों में अंतर क्या-क्या हैं?

छात्रों की स्वतंत्र प्रतिक्रिया का अवसर दें।

'है' या 'नहीं' लिखें।

- दोनों प्रसंगों में पात्र एक हैं?
- प्रसंगों के समय समान हैं?
- स्थान एक हैं?

अध्यापक समझाएँ, हर एक प्रसंग के आधार पर पात्र, समय, स्थान आदि अलग-अलग होंगे।

मान लें इसका अभिनय या फिल्मांकन करना है। इसके लिए पहले हमें क्या-क्या तैयारियाँ करनी हैं?

पहले प्रत्येक दृश्य की पटकथा लिखनी है।

अब हम प्रथम प्रसंग के दृश्य पर पटकथा तैयार करें।

अब किन-किन बातों पर ध्यान देना है?

छात्रों की स्वतंत्र प्रतिक्रिया का अवसर दें।

- प्रसंग क्या है?
- यह घटना कहाँ हुई?
- कब हुई?
- पात्र कौन-कौन हैं? (पात्रों की आयु तथा वेश-भूषा)
- उनके बीच की बातचीत कैसी है?

अब हम पहले प्रसंग की पटकथा तैयार करें।

गाड़ीवाले को पंख देकर नौजवान पक्षी का दीमक खरीदना।

वैयक्तिक रूप से लिखने का अवसर दें। दो-चार की प्रस्तुति।

दल में बिठाकर परिमार्जन का अवसर दें।

दलों की प्रस्तुति।

परिमार्जन के दौरान यह वर्कशीट दें और इससे सहायता लेने कहें।

अधिक जानकारी के लिए टीवी पटकथा का तीसरा दृश्य देखने को कहें।

सीन 3

मनोहर चाचा के घर का कमरा। सुबह के 8 बजे हैं।

(टीवी पर 26 जनवरी की परेड आ रही है। गोपू और उसके बाबा टकटकी लगाए देख रहे हैं। मनोहर चाचा बगल में बैठे हैं। टीवी में झाँकियाँ चल रही हैं, और एक कमेंट्री भी।)

टीवी से आती कमेंट्री: और यह है झाँकी असम राज्य की... आगे-आगे बीहू नृत्य करती महिलाएँ...

गोपू : बाबा यह आवाज़ कहाँ से आ रही है?

मनोहर चाचा : यह भी टीवी से ही आ रही है गोपू लाल!

गोपू : जादू है ना...!!

दृश्य - 1

.....। .....।

(.....

....

....)

गाड़ीवाला : .....।

नौजवान पक्षी : .....।

गाड़ीवाला : .....।

नौजवान पक्षी : .....।

(नौजवान पक्षी एक पंख देकर दो दीमकें अपनाता है और उड़ जाता है।)

गाँधीजी गाँधीजी कैसे बने

अधिगम उपलब्धि : लघु लेख तैयार करता है।

अध्यापक 'गांधीजी गांधीजी कैसे बने' लेख का यह अंश वाचन के लिए दें।

> गांधीजी की यह सोच थी कि जब आपके देश के अधिकांश लोग गरीब हों तो आपको फ़िज़ूलखर्ची और दिखावा नहीं करना चाहिए। अगर आप सचमुच अपने देश और देशवासियों से प्यार करते तो आपको कम से कम में काम चलाना चाहिए और सादगी का महत्व समझना चाहिए।

वाचन करने के बाद अध्यापक वर्कशीट दें। बताएँ, सही पर '✓' चिह्न लगाएँ।

- गाँधीजी की सोच क्या थी?
  - देश के अधिकांश लोग अमीर हैं। ☐
  - देश के अधिकांश लोग गरीब हैं। ☐
- फ़िज़ूलखर्ची का मतलब क्या है?
  - अधिक खर्च करना। ☐
  - कम खर्च करना। ☐
- कम से कम में काम चलाना-का मतलब क्या है?
  - मित व्यय करके सरल जीवन बिताना। ☐
  - अधिक खर्च करके आडंबर जीवन दिखाना। ☐
- यहाँ गाँधीजी कैसा जीवन बिताने का उपदेश देते हैं?
  - सादगी का ☐
  - आडंबर का ☐

अध्यापक बताएँ, यहाँ गांधीजी किसके महत्व के बारे में कहते हैं?
चर्चा करें :

अब हमें एक लघु लेख लिखना है। इसके लिए हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना है?
छात्रों की स्वतंत्र प्रतिक्रिया का अवसर दें।
पूछें, लेख लिखते समय शीर्षक देना है? है या नहीं
विषय पर आधारित होना है? है या नहीं
बताएँ, अब हम कुछ सूचना देखें।

- फ़िज़ूलखर्ची और दिखावा छोड़ना।
- कम से कम में काम चलाना।
- सरल जीवन बिताना।
- सादगी का महत्व समझना।

पढ़ने का अवसर दें।

- हमें अपनी वेश-भूषा में, भोजन में और अपनी बातों में भी सरलता लानी चाहिए।
- हमें फ़िज़ूलखर्ची और दिखावा छोड़कर कम से कम में काम चलाना चाहिए।
- निम्नलिखित वाक्यों को क्रमबद्ध करके एक अनुच्छेद लिखने का निर्देश दें।
- सरल जीवन से एक व्यक्ति में गुणवत्ता आती है।
- हमें जीवन में सादगी को अपनाना चाहिए।
- गाँधीजी ने भी ऐसा कहा था कि हमारे देश के अधिकांश लोग गरीब हैं इसलिए हमें सादगी को अपनाना है।

- वैयक्तिक रूप से लिखवाएँ।
- दो-चार की प्रस्तुति।
- दल में बिठाकर परिमार्जन।
- अध्यापक द्वारा संशोधन।

अब इस अनुच्छेद के लिए उचित शीर्षक प्रत्येक छात्र स्वयं लिखें।
शीर्षक की सार्थकता पर आवश्यक चर्चा चलाएँ।

नंगे पैर

अधिगम उपलब्धि : कहानी पढ़कर डायरी तैयार करता है।

यह अनुच्छेद छात्रों को पढ़ने दें :

'नंगे पैर' कहानी की प्रमुख पात्र है- बेबी। उसके एक पैर नहीं है। वह बैसाखियों के सहारे चलती है। वह घर में डाक की प्रतीक्षा में बैठती रहती है। एक दिन एक नया पोस्टमैन आया। उसके पास छाता नहीं, साइकिल नहीं और जूता भी नहीं था। बेबी ने निश्चय किया कि वह पोस्टमैन को जूते बनवाकर देगी। उसने हरीबा मोची से कहकर जूते बनवाए। होली के उपहार के रूप में पोस्टमैन को दे दिया। पोस्टमैन दुखी था कि इस लड़की को मैं पैर कैसे दे सकूँ? पोस्टमैन ने विवश होकर बड़े बाबू से किसी दूसरी जगह जाने की अनुमति माँगी।

अनुच्छेद का आशयग्रहण सुनिश्चित करने के लिए चर्चा चलाएँ :

- नंगे पैर कहानी के पात्र कौन-कौन हैं?
- बेबी की विशेषता क्या है?
- नए पोस्टमैन की विशेषता क्या है?
- बेबी ने पोस्टमैन के लिए क्या बनवाने का निश्चय किया?
- हरीबा कौन था?
- बेबी ने किससे जूते बनवाए?
- किस त्यौहार के उपहार के रूप में बेबी ने पोस्टमैन को जूते दिए?
- उपहार मिलने पर भी पोस्टमैन दुखी था। क्यों?

अब वर्कशीट की पूर्ति करने को दें :

इन वाक्यों में से प्रत्येक पात्र की सोच चुनें और पदसूर्य की पूर्ति करें :

- मालूम नहीं यह नंगे पैर क्यों घूम रहा था।
- बैसाखियों के सहारे चलने में इसे कितनी कठिनाई होगी।
- कुछ दिन से देख रहा था उस लड़की के एक पैर नहीं है।
- कल बड़े बाबू से कहकर दूसरे इलाके में जाऊँगा।
- इसके पास छाता, साइकिल कुछ भी नहीं।
- उस बेचारी को मैं कैसे पैर दे सकूँ। असंभव है।
- हरीबा से कहकर उसके लिए जूते बनवाए।
- होली के उपहार के बहाने आज उसे जूते दिए।
- जूते मिलने पर भी वह उदास था। पता नहीं क्यों?
- इसी स्थिति में उसे देख नहीं पाऊँगा।
- जो भी हो, उसे जूते देने से मैं बहुत खुश हूँ।
- उस लड़की ने आज मुझे जूते दिए, उपहार के रूप में।

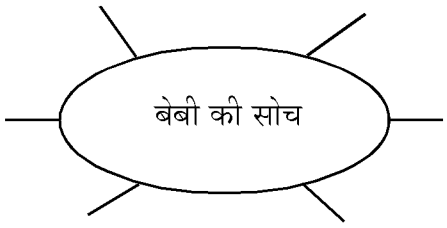

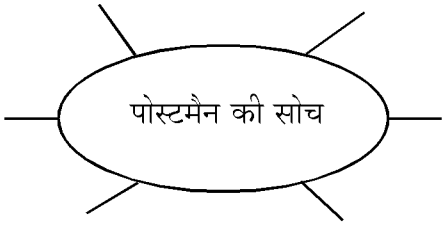

वैयक्तिक रूप से वर्कशीट की पूर्ति कराएँ।
चुनिंदे छात्रों की प्रस्तुति हो।
दल में चर्चा करके परिमार्जन करने का मौका दें।
अब पोस्टमैन की डायरी का यह अंश पढ़ने को दें :

21 नवंबर 2012
सोमवार
बेबी ने आज मुझे जूते दिए, उपहार के रूप में। कुछ दिन से देख रहा था, उस लड़की के एक पैर नहीं है। बैसाखियों के सहारे चलने में इसे कितनी कठिनाई होगी। उस बेचारी को मैं कैसे पैर दे सकूँ... असंभव है। इसी स्थिति में मैं उसे देख नहीं पाऊँगा। कल बड़े बाबू से कहकर मैं दूसरे इलाके में जाऊँगा।

अब पोस्टमैन की डायरी को आधार बनाकर चर्चा चलाएँ :

- पोस्टमैन की सोच क्या-क्या हैं?
- उसकी सोच में कौन-कौन सी घटनाओं का उल्लेख है?
- इन वाक्यों में 'पोस्टमैन' के स्थान पर किन-किन शब्दों (सर्वनामों) का प्रयोग किया गया है?
- इन वाक्यों में कौन-कौन-सी क्रियाओं का प्रयोग है?
- ये क्रियाएँ किस काल का संकेत देती हैं?
- इनमें कौन-से वाक्य आपको बहुत विशेष लगे?

ध्यान दें :
डायरी में मुख्य घटनाओं का उल्लेख हो।
घटनाओं पर लिखनेवाले के भावनाएँ एवं विचार भी व्यक्त हों।
मैं, मेरा, मुझे जैसे सर्वनामों का प्रयोग हो।
क्रियाएँ ज्यादातर भूतकाल में हों।
दिलचस्प शब्द या प्रयोग भी हों।
तारीख, दिन आदि भी लिखें।

पुल बनी थी माँ

अधिगम उपलब्धि : कविता पढ़कर आशय लिखता है।

'पुल बनी थी माँ' कविता से संबंधित यह अनुच्छेद पढ़ने को दें।

> माँ हम भाइयों के बीच का संबंध जोड़ती थी। हम कोई नियंत्रण के बिना जीवन बिताते थे। धीरे-धीरे माँ दुर्बल होती रहीं। हमने समझा कि माँ बूढ़ी हो रही हैं। धीरे-धीरे माँ हमें भार-सा लगने लगीं। बुढ़ापे में माँ का संरक्षण हमें मुश्किल हो गया। आखिर एक दिन माँ मर गई। माँ के मरते ही हम निराश्रय हो गए।

अध्यापिका ये प्रश्न करें :

1. भाइयों के बीच का रिश्ता कौन जोड़ता था?
2. भाइयों का जीवन कैसे चलता था?
3. माँ के दुर्बल होने को भाइयों ने क्या समझा?
4. बूढ़ी होने पर माँ का संरक्षण भाइयों के लिए मुश्किल हो गया। क्यों?
5. माँ के मरने का परिणाम क्या था?

(छात्रों को प्रत्येक प्रश्न पर सोचने और उत्तर बताने का अवसर दें।)

चर्चा के बाद यह वर्कशीट प्रस्तुत करें और उसका अंकन करने को कहें :

सही प्रस्ताव पर 'सही' का निशान लगाएँ।

1. माँ और संतानों के बीच कोई रिश्ता नहीं था। ☐
2. भाइयों का जीवन स्वतंत्र रूप से चलता था। ☐
3. माँ का दुर्बल होना बूढ़ी होने का निशान था। ☐
4. माँ बेटों के लिए भार बन गईं। ☐
5. माँ के मरने से बेटे निराश्रय हो गए। ☐

वर्कशीट की वैयक्तिक रूप से पूर्ति करने दें।

दलों में हस्तांतरण करने दें और वर्कशीट के प्रस्तावों पर चर्चा चलाने दें।

प्रत्येक दल सही प्रस्तावों को पेश करें।

अब कविता की पहली छह पंक्तियों का आशय लिखने को कहें।

लिखे आशय दलों में बाँटने का मौका दें।

दलों की चर्चा के समय ये प्रश्न दलों में दें :

साधारणतः पुल का काम क्या है?

यहाँ पुल कौन है?

'पुल बनी थी माँ' का मतलब क्या है?

बेधड़क दौड़ने से आपने क्या समझा?

यहाँ बेधड़क कौन-कौन दौड़ रहे थे?

हरी लाल बत्ती किसके लिए है?

छुक छुक छक छक से क्या तात्पर्य है?

चली चर्चा के उपरांत अपनी टिप्पणी को बेहतर बनाने का अवसर सभी को दें।

दो-तीन छात्रों से प्रस्तुत कराएँ।

आवश्यक है तो दलों में विचार-विनिमय करने दें।

कविता की पंक्तियों का आशय लिखते समय किन-किन बातों पर ध्यान देना है?

चर्चा निम्नांकित बिंदुओं के आधार पर चलाएँ :

1. कवि और कविता का संक्षिप्त परिचय हों।
2. सरल एवं उचित भाषा का प्रयोग हो।
3. पंक्तियों का आशय स्पष्ट हो।
4. विशेष प्रयोगों का उल्लेख हो।

इस चर्चा के बाद वैयक्तिक रूप से सुधारकर लिखने का अवसर प्रदान करें।

अब नीचे के वाक्यों को उचित क्रम से मिलाकर कविता की पंक्तियों पर एक अनुच्छेद तैयार करने को कहें।

- कवि के अनुसार माँ एक पुल के समान थीं।
- ये 'पुल बनी थी माँ' कविता की पंक्तियाँ हैं।
- इसके कवि श्री नरेंद्र पुंडरीक हैं।
- माँ रूपी पुल से बेटों के जीवन रूपी गाड़ी स्वतंत्र रूप से चल रही थी।
- माँ अपनी संतानों को आपस में जोड़ती थीं।
- मतलब भाइयों की ज़िंदगी बेरोकटोक चलती थी।
- वहाँ नियंत्रण की कोई हरी लाल बत्ती नहीं थी।

नंगे पैर

अधिगम उपलब्धि : कहानी पढ़कर पत्र तैयार करता है।

यह अनुच्छेद छात्रों को पढ़ने दें :

> 'नंगे पैर' कहानी के प्रमुख पात्र हैं बेबी और नया पोस्टमैन। बेबी के एक पैर नहीं है। वह बैसाखियों के सहारे चलती है। वह घर में डाक की प्रतीक्षा में बैठती रहती है। एक दिन एक नया पोस्टमैन आया। उसके पास छाता नहीं, साइकिल नहीं और जूता भी नहीं था। बेबी ने निश्चय किया कि वह पोस्टमैन को जूते बनवाकर देगी। उसने हरीबा मोची से कहकर जूते बनवाए। होली के उपहार के रूप में पोस्टमैन को दे दिया। पोस्टमैन दुखी था कि इस लड़की को मैं पैर कैसे दे सकूँ? पोस्टमैन ने विवश होकर बड़े बाबू से किसी दूसरी जगह जाने की अनुमति माँगी।

अनुच्छेद का आशयग्रहण सुनिश्चित करने के लिए ये प्रश्न पूछें :

- यहाँ किस कहानी के बारे में कहा गया है?
- कहानी के मुख्य पात्र कौन-कौन हैं?
- बेबी ने किसके लिए जूते बनवाए?
- जूते किस अवसर पर पोस्टमैन को दिए गए?
- जूते मिलने पर पोस्टमैन का विचार क्या था?
- बड़े बाबू से पोस्टमैन ने क्या माँगा?

छात्रों को प्रत्येक प्रश्न पर प्रतिक्रिया करने का अवसर दें।

अब यह वर्कशीट दें :

सही प्रस्ताव चुनकर लिखें।

- पोस्टमैन ने बेबी का उपहार स्वीकार किया।
- पोस्टमैन छाता लेकर चलता था।
- पोस्टमैन दुखी था कि मैं बेबी को पैर नहीं दे सकेगा।
- बड़े बाबू से पोस्टमैन ने अपना लाइन बदलकर देने की अनुमति माँगी।
- पोस्टमैन ने बेबी को जूते दिए।

वैयक्तिक रूप से लिखने का मौका दें।

आवश्यक है तो परिमार्जन करने में मदद दें।

गलत प्रस्तावों को सही करके लिखने का भी अवसर दें।

अध्यापक कहें,

अब हम कल्पना करें कि पोस्टमैन अपने विचारों को अपने दोस्त से कहना चाहता है। उसने अपने दोस्त के नाम पत्र लिखा। वह पत्र कल्पना करके लिखें।

छात्र वैयक्तिक रूप से लिखें।

दो-एक को प्रस्तुतीकरण करने का अवसर दें।

अब पत्र की विशेषताओं पर चर्चा चलाएँ :

पत्र लिखते समय हमें किन-किन बातों पर ध्यान देना है?

पत्र के प्रारूप का भी परिचय दें :

स्थान .....

तारीख .....

प्रिय मित्र,

नमस्कार। .....

.....

.....

आपका/आपकी

.....

(हस्ताक्षर)

नाम .....

अब परिमार्जन करके वैयक्तिक रूप से लिखने का मौका दें।
दल में विचार विनिमय करके परिमार्जन करने का निर्देश दें।
दलों की ओर से प्रस्तुति कराएँ।